भूमिका

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में अधिकांश इतिहासकारों ने दलित लेखकों एवं उनकी रचनाओं को अनदेखा किया है। परंतु कई तरह के सवाल मन में बार- बार उठते हैं और सोचने पर मजबूर करते हैं कि क्या दलित लेखन उस समय नहीं हो रहा था, क्या दलित लेखक संवेदनशील नहीं थे, या विचारशील नहीं थे ? उन पर किये जा रहे शोषण, दमन और दासत्व के विरुद्ध उनमें कोई आक्रोश नहीं था? क्या उनमें समानता, स्वतन्त्रता की चाह नहीं थी? ऐसे बहुत से सवाल झिंझोड़ कर रख देते हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास में कबीर तथा रैदास का नाम भक्तिकाल में दिया गया है लेकिन स्वतन्त्रता के बाद तथा उससे पहले हिंदी साहित्य के इतिहास में दलित लेखकों का जिक्र नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि दलित लेखकों को हिंदी साहित्य के इतिहास में दर्ज नहीं किया गया। हिंदी दलित साहित्य को हिंदी साहित्य में स्थान नहीं मिला। किन्तु हिंदी दलित साहित्य आज हिंदी साहित्य में कोई ऐसा साहित्य नहीं है जिसकी कोई पहचान न हो। दलित साहित्य ने अपनी अलग पहचान बना बनाई है और उसका अपना वजूद भी है। सबसे ज्यादा आज इसी साहित्य की चर्चा होती है। हिंदी दलित साहित्य आज सबसे ज्यादा लोकप्रिय बन चुका है।

हिंदी दलित साहित्य की लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि पूरे भारत में आज दलित साहित्य पढ़ा-लिखा और उस पर चर्चा की जा रही है। साथ ही हिंदी साहित्य के इतिहास की तरह इस साहित्य में भी महानायक हुए हैं। जिनके साहित्य-लेखन व आंदोलनों से दलित साहित्य का आज अपना अस्तित्व है। जिनमें डॉ. भीमराव अंबेडकर, ज्योतिबा फुले, रामास्वामी पेरियर, स्वामी अछूतानंदजी 'हरिहर' व चंद्रिका प्रसाद जिज्ञासु आदि प्रमुख हैं। जिन्होंने हिंदी दलित साहित्य को स्थापित किया है। जिस कारण हर पाठक इस साहित्य को जानने की इच्छा रखता है।

पहला अध्याय "हिंदी दलित साहित्य : शब्द, परिभाषा और स्वरूप" में चार उप-अध्याय हैं। पहला अध्याय में हिंदी दलित साहित्य के बारे में बात की गयी है। पहला उप-अध्याय 'दलित शब्द व परिभाषा' के बारे में बात की गई है। दूसरे उप-अध्याय में 'हिंदी दलित साहित्य : स्वरूप' के बारे में चर्चा की गई है। तीसरे अध्याय में 'हिंदी दलित साहित्य के उद्भव व विकास' हिंदी दलित साहित्य के विकास का वर्णन किया गया है।

चौथे उप-अध्याय में 'हिंदी दलित साहित्य चेतना की वर्तमान स्थिति' स्थिति में दलित साहित्य के बारे में व्यक्त किया गया है।

दूसरे अध्याय में "परिचय एवं साहित्यिक साहित्यिक योगदान" है इस अध्याय को दो उप-अध्याय में बांटा गया है। इस अध्याय में दोनों लेखकों की साहित्यिक यात्रा के बारे में वर्णन किया गया है। पहला उप-अध्याय में स्वामी अछूतानंदजी 'हरिहर' के व्यक्तित्व, कृतित्व व साहित्यिक योगदान पर प्रकाश ड़ाला गया है। दूसरे उप-अध्याय में चंद्रिका प्रसाद जिज्ञासु के व्यक्तित्व, कृतित्व व साहित्यिक योगदान के बारे में चर्चा की गई है।

तीसरे अध्याय "हिंदी दलित साहित्य की चेतना के विकास में 'हरिहर' व जिज्ञासु का योगदान" का प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में विशेष महत्व है। इन चारों उपाध्यायों में समाज में उभरी समस्याओं के बारे में चर्चा की गई है। दोनों कवियों ने इन समस्याओं को जनता के सामने प्रस्तुत कर उन्हें जागरूक करने का प्रयास किया है। पहला उप-अध्याय में 'वर्णव्यवस्था का विरोध' दोनों लेखकों की दृष्टि पर प्रकाश डाला गया है। दूसरे उप-अध्याय में 'जातिवाद और ब्राह्मणवाद का विरोध' पर चर्चा है। तीसरे उप-अध्याय 'अस्पृश्यता व छूत-अछूत भेदभाव का विरोध' के बारे में बताया गया है। चौथे उप-अध्याय 'हिंदी दलित साहित्य की चेतना के विकास में योगदान' बारे में अभिव्यक्त किया गया है।

चौथे अध्याय 'भाषा शैली' में दो उप-अध्याय हैं। पहला उप-अध्याय 'स्वामी अछूतानंदजी 'हरिहर' की भाषा शैली पर विचार किया गया है। दूसरे उप-अध्याय में चंद्रिका प्रसाद जिज्ञासु की भाषा शैली के बारे में बताया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के माध्यम से स्वामी अछूतानंदजी 'हरिहर' तथा चंद्रिका प्रसाद जिज्ञासु का हिंदी दलित साहित्य की चेतना के विकास में योगदान को दर्शाया गया है। दोनों कवियों ने अपनी रचनाओं व व्याख्यानों के माध्यम से समाज में दलितों को जागरूक करने का प्रयास किया है। वर्णव्यवस्था, जातिव्यवस्था, ब्राह्मणवाद, अस्पृश्यता, छूआछूत जैसी कुरीतियां, जो समाज में सदियों से चली आ रही हैं, इनका विरोध लेखकों ने किया है। वर्तमान समय में जातिव्यवस्था ज्यों की त्यों बनी हुई है उस पर भी दोनों लेखकों ने प्रकाश

डाला है। दोनों लेखकों ने इन सभी कुरीतियों को अपने साहित्य के माध्यम से लोगों के सम्मुख लाने का प्रयास किया है उन्होंने जिससे दलित साहित्य को एक नई राह तथा ऊर्जा प्रदान की है।

अपने लघु शोध प्रबंध में मैंने जिन विद्वानों की सामग्री का प्रयोग किया है। सबसे पहले मैं उनका आभार व्यक्त करना चाहता हूँ।

मेरे लघु शोध-प्रबंध को पूरा करने में मेरे शोध निर्देशक व मार्गदर्शक डॉ. बीर पाल सिंह यादव की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जिन्होंने मेरा समय-समय पर मार्गदर्शन किया। इसके लिए मैं उनका आभारी हूँ। इसी क्रम में म. गां. अं. हिं. वि. वि., वर्धा (महाराष्ट्र) के साहित्य विद्यापीठ की अधिष्ठाता प्रो. प्रीति सागर और विभागाध्यक्ष कृष्ण कुमार सिंह का भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ। साथ ही मैं अन्य सभी गुरुजनों का भी आभार व्यक्त करता हूँ। जिन्होंने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से मेरा मार्गदर्शन किया है।

सर्वप्रथम मैं अपने पिता स्व. श्री राधेश्याम जी को प्रणाम व सहृदय नमन् करता हूँ तथा मेरी माता जी श्रीमती राजवती जी का आशीर्वाद व चरण स्पर्श करता हूँ। साथ ही मेरे बड़े भईया, भाभी, छोटे भाई और मेरी छोटी सी भतीजी सबका मैं आभार व्यक्त करता हूँ। जिनसे मुझे समय-समय पर स्नेह व प्रेरणा मिलती रही।

मेरे लघु शोध प्रबंध में जिन्होंने मेरी समय-समय पर सहायता की है उनमें जितेंद्र सोनकर, राजकुमार, चेतन सिंह, कुमार गौरव, पंचदेव, अमित, लोकेश, प्रेम कुमार, सुख राम आदि का मैं आभारी हूँ। साथ ही मित्रों में सागरिका, आरती, अंकिता व नीरज आदि को भी मैं धन्यवाद देता हूँ। इन सब लोगों की वजह से मैं अंततः अपना लघु शोध प्रबंध पूरा कर पाया।

विशेष रुप से मैं प्रीतू झा मैम और मेरे बड़े भाई रवि कुमार का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मुझे एम. फिल. करने की प्रेरणा दी। साथ ही अपने मित्रों में तरुण सैनी, रोहित वर्मा और आदर्श राजपूत का आभार व्यक्त करता हूँ। जिन्होंने मेरी समय-समय पर सहायता की। इसके अलावा उन सभी मित्रों का भी में आभार व्यक्त करता हूँ। जिन्होंने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में मेरी सहायता की है।

तरुण कुमार